भाषा | साहित्य | संस्कृति

SPREAD GOODNESS SPREAD HAPPINESS
HSGS PUBLICATIONS

प्रश्नचिह्न

एक नए परिवेश में
जब भी
आदमियत का मुखौटा पहने
एक आदमी मिलता है
और मुझे
आदमियत के नाम पर
हर बार
छल कर चला जाता है
और मैं
रास्तें की तरह
उसे देखता रहता हूँ।

~ डॉ. लहरी राम मीणा

वर्ष:01, अंक:04, जुलाई 2024

9 789366 315867

चित्र- अंतरिक्ष

संपादक: आलोक रंजन

भाषा | साहित्य | संस्कृति

प्रश्नचिह्न

जुलाई 2024 | चतुर्थ अंक

प्रकाशक:
एस जी एस एच प्रकाशन

प्रबंध संपादक:
दिव्या त्रिवेदी

संपादक
आलोक रंजन

प्रबंध सहयोग: पीयूष पुष्पम

सहयोग
खुशनुमा बानो

आवरण: अंतरिक्ष

रेखांकन: दीया शर्मा

प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं का सर्वाधिकार रचनाकारों के अधीन सुरक्षित है। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार, तथ्य लेखकों के अपने हैं। प्रश्नचिह्न में प्रकाशित रचनाओं के लिए एस जी एस एच प्रकाशन, मुम्बई का सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही प्रकाशन इसके लिए उत्तरदायी है।

अनुक्रम

संपादकीय

कविता

डॉ लहरी राम मीणा, नीलम पांडेय, केशव शरण

लक्ष्मीकांत मुकुल, पलक द्विवेदी

आलेख

सिद्धेश्वर, मृत्युंजय कुमार मनोज

कहानियां

डॉ पूरन सिंह, अर्चना त्यागी

पुस्तक समीक्षा

मनीष कुमार, कशिश माथुर

विविध

अमित कुमार, रानी वर्मा

भूख की परिभाषा

एक आदमी
रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी भी है
जो न रोटी बेलता है, न रोटी खाता है
वह सिर्फ़ रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ—
'यह तीसरा आदमी कौन है?'
मेरे देश की संसद मौन है।
~ धुमिल

महान कवि धुमिल की यह रचना अंदर से झकझोर देती है। भूख तो समस्त प्राणियों को लगती है। चाहे वह कहीं भी हो बिहार बंगाल या फिर गुजरात चाहे दिल्ली को ही ले लीजिए हर जगह भुख लगती है। इस दुनिया में भगवान है तो भगवान को चाहिए कि ऐसा स्थान बनाएं जहां पर भुख न लगे। मैं जब बच्चा था एक दो रूपए घर से मिल जाते थे लेकिन ऊपर वाले से आग्रह करने के बावजूद भी एक भी सिक्का रोड पर नहीं गिराता था कि मैं चीनी खरीद कर चीनी भात खा सकूं। मैं अपने गांव बड़े पशु व्यापारियों को देखता था वो पुजा पाठ करते थे मैंने भी किया। मुझे पता चला मेरे गांव में शेख जी सबसे अमीर आदमी हैं और मुस्लिम हैं। फिर मैंने रोज मस्जिद में माथा टेकने लगा लेकिन मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि मेरे मां बाप और दादा दादी के अलावे किसी ने कुछ दिया।
गांव के बच्चे कहते थे कि जहां धुल से बना गोल रह जाता है भगवान जी वहां पैसा गिराते हैं। जब मैं तीसरी-चौथी क्लास में अखबार पढ़ने पुल पर जाया करता था। पढ़ने के बाद घंटों तक उन गोलों में खोजता रहता था भगवान का भेजा हुआ पैसा!

प्रश्न यह है भूख तो दिल्ली में भी उतनी ही लगती होगी, जितनी हमारे गांव में। पर दिल्ली देश की राजधानी है। यहां लोगों को सत्ता के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। तीन साल से रह रहा हूं, कह सकता हूं देश की राजधानी की भूख बाकी इलाकों से कुछ ज्यादा है। किसी ने ठीक कहा है कमबख्त पेट की भूख जिस्म बूढ़ा होने पर भी नहीं बुढ़ाती। भूख के लिए अकाल ज़रूरी नहीं। भूख की सियासत पर दुनिया टिकी है। भूख पर विश्वास या अविश्वास जैसी कोई बात नहीं। भूख सत्य है, शाश्वत है। भक्त और भगवान कल्पनाधारित हैं, अवधारणा हैं। भूख वास्तविक है। विश्वास की सियासत केवल काल्पनिक बातों या अवधारणाओं पर चलती है। अगर भूख ख़तम हो जाए तो न भक्त रहेंगे और न भगवान। इसका अर्थ हुआ कि भूख, भक्त और भगवान की पर्याय नहीं। बंदा चाहे आस्तिक हो या नास्तिक, भगवान के बिना तो रह सकता है पर रोटी के बिना नहीं। लोग कहते हैं भगवान भक्ति के भूखे हैं पर भूखे पेट भजन नहीं होय गोपाला।

भूख एक असहज या दर्दनाक शारीरिक अनुभूति है जो आहार ऊर्जा के अपर्याप्त उपभोग के कारण होती है। यह तब पुरानी हो जाती है जब व्यक्ति सामान्य, सक्रिय और स्वस्थ जीवन जीने के लिए नियमित आधार पर पर्याप्त मात्रा में कैलोरी (आहार ऊर्जा) का सेवन नहीं करता है।

पूरे इतिहास में, भूख से पीड़ित लोगों की सहायता करने की आवश्यकता को आम तौर पर, हालांकि सार्वभौमिक रूप से नहीं पहचाना गया है। दार्शनिक सिमोन वेइल ने लिखा है कि जब आपके पास ऐसा करने के लिए संसाधन हों तो भूखों को खाना खिलाना सभी मानवीय दायित्वों में सबसे स्पष्ट है। वह कहती हैं कि प्राचीन मिस्र में भी , कई लोगों का मानना था कि लोगों को यह दिखाना होगा कि उन्होंने भूखों की मदद की है ताकि वे मृत्यु के बाद खुद को सही ठहरा सकें।

एक कहानी में राजा को वरदान मिलने के बाद उसके हाथ से लगने वाली कोई भी चीज़ सोने की हो जाती थी। पर किसी कहानी में किसी गरीब के हाथ से लगने वाली किसी वस्तु के रोटी में बदलने का जिक्र नहीं आता। सही बात तो यह है कि मैं स्वर्ग और नर्क के बारे नहीं जानना चाहता।जो भगवान जीते जी लोगों को भोजन नहीं दे सकता, वह मरने के बाद स्वर्ग क्या देता होगा। जीते जी भले पीने को साफ़ पानी न नसीब हो, पर मरने के बाद पूरी गारंटी है कि ज़न्नत में शराब की नदियां मिलेंगी। मन बहलाने के लिए बला की ख़ूबसूरत हूरें रक्स करती ख़िदमत में हाजिऱ रहेंगी।

इतिहासकार गैब्रिएला सोटो लावेएगा जी कहती हैं कि
भूख को अक्सर अधिक लोगों को खिलाने के लिए अधिक भोजन पैदा करने के एक संभव संख्या खेल के रूप में देखा जाता है... फिर भी इतिहास दर्शाता है कि अकेले विज्ञान, उदार वित्त पोषण के साथ भी, भूख जैसी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्या को हल नहीं कर सकता है।

गैब्रिएला सोटो लावेएगा हार्वर्ड विश्वविद्यालय में विज्ञान के इतिहास की प्रोफेसर हैं। वह वर्तमान में सोनोरा, मेक्सिको और पंजाब, भारत में कृषि अनुसंधान और जल के बारे में एक पुस्तक पर काम कर रही हैं।

आपका-

आलोक रंजन

alokranjanoffice@gmail.com

prashanchinha.patrika@gmail.com

अपने जैसा माना

डॉ लहरी राम मीणा

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
काशी हिंदू विश्वविद्यालय
वाराणसी 221005
ईमेल: lehariram@gmail.com

मुझे सब ने रुलाया
अपना मानने का वादा
सभी ने किया
अपने अपने तरीकों से

और मैं
उनको मानता गया
उनके तरीकों से

क्या बोलूं
उन सब पर
इस शहर पर

सबने अपने अपने अनुकूल
बाटा मुझे
कभी भाषा के नाम पर
कभी जाती के नाम पर
कभी गौत्र के नाम पर
कभी क्षेत्र के नाम पर
कभी रंग के नाम पर
कभी धर्म के नाम पर
कभी वफादारी के नाम पर
कभी समूह
के नाम पर